अरे दिल ग़ाफ़िल गफलत मत कर इक दिन जम तेरे आवेगा

अरे दिल ग़ाफ़िल गफलत मत कर,
इक दिन जम तेरे आवेगा |

सौदा कारन को या जग आया,
पूँजी लाया,मूल गंवाया,
प्रेम नगर का अंत ना पाया,
ज्यों आया त्यों जावैगा |
अरे दिल ग़ाफ़िल गफलत मत कर,
इक दिन जम तेरे आवेगा |

सुन मेरे साजन सुन मेरे मीता,
या जीवन में क्या-क्या बीता,
सर पाहन का बोझा लीता,
आगे कौन छुड़ावैगा,
अरे दिल ग़ाफ़िल गफलत मत कर,
इक दिन जम तेरे आवेगा |

परले पार मेरा मीता खड्या,
उस मिलने का ध्यान ना धरया,
टूटी नांव ऊपर जा बैठा,
ग़ाफ़िल गोता खावेगा,
अरे दिल ग़ाफ़िल गफलत मत कर,
इक दिन जम तेरे आवेगा |

दास कबीर कहे समझाई ,
अंत काल तेरो कौन सहाई,
चला अकेला,संग ना काई,
किया आपना पावेगा,
अरे दिल ग़ाफ़िल गफलत मत कर,
इक दिन जम तेरे आवेगा |

स्वर : हरी ॐ शरण

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/1174/title/arey-dil-gafil-gaflat-mat-kar-Kabir-Das-bhajan-with-lyrics-by-Hari-Om-Sharan

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |